REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2018

जाटों की उत्पन्ति एवम् विकास – एक विवेचनात्मक अध्ययन

डॉ. नीरज कुमार गौड़
प्राचार्य, एच के एल कालेज ऑफ ऐजूकेशन,
सम्बध्द पंजाब विश्वविद्यालय, चंड़ीगढ़ गुरूहरसहाय, फिरोजपुर (पंजाब)

सारांश

जाट शक्ति देश की अमूल्य निधि है। इस महान जाति की उत्पत्ति का विषय विवादग्रस्त है। इसे इतिहासकारों, विद्वानों, वैज्ञानिकों, भाषाविद व शारीरिक बनावट का अध्ययन करने वालों ने अपने–अपने अनुसार सुलझाने का प्रयास किया है। पौराणिक कथाओं के अनुसार यह शिव की जटा से उत्पन्न होने के कारण जाट कहलाये। महाभारत काल में साकाल के जटित्का का वर्णन है इन्हीं जटित्काओं को जाट माना गया है। जट् शब्द समूह व एकता के लिये प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार जट् का ही दूसरा रूप जाट है। शरीरिक बनावट के आधार पर मि0 नैसफील्ड व सर एच0 रिजले जाटों को आर्य मानते हैं। कुछ विद्वान इन्हें यादवों अर्थात राजपूतों से उत्पन्न मानते हैं। बहुत से व्यक्ति इनकी उत्पत्ति इडों–सीथियन व इंडो–आर्यन मानते हैं अर्थात शकों, सीथियन व हूणों की संतान मानते है। जाट सम्पूर्ण भारतीय व आर्य हैं। यदि राजपूत अपनी वीरता व साहस के लिये प्रसिद्ध रहे हैं तो जाट इनसे किसी भी क्षेत्र में कम नहीं हैं। जाट विशिष्ट वंश न होकर प्रजातांत्रिक शक्तियों का संघ है। जाट जाति आखिरकार जाट ही कहलाती है चाहे यह किसी भी धर्म या सम्प्रदाय में विभाजित हो जाये।

प्रस्तावना :

जाट विशिष्ट वंश न होकर एक प्रकार से "प्रजातांत्रिक शक्तियों का संघ है"।[1] जाटशक्ति देश की अमूल्य निधि है। यह देश का भरण–पोषण करती है। इसने प्रारम्भ से ही मातृभूमि की रक्षा के लिये प्राणों की आहूति दी है। साहस, वीरता, दृढ़ता और परिश्रम में यह किसी से कम नहीं है। यह सदैव शौर्य एवम् व्यापकता की दृष्टि से इतनी अधिक है कि इसे एक राष्ट्र की संज्ञा प्रदान की जा सकती है।

13 वीं शताब्दी तक जाट एक संगठित शक्ति थी। जिसमें रक्त, भाषा, धर्म एवं सम्प्रदाय के आधार पर एकता पायी जाती थी, कालान्तर में यह हिन्दू, मुसलमान एवं सिक्ख धर्म में विभाजित हो गयी। जाट शक्ति आखिरकार जाट ही कहलाती है चाहे यह किसी भी धर्म या सम्प्रदाय में विभाजित हो जाये। यह अपने पुराने जन जातीय गौरव के साथ रक्त परम्परा के आधार पर दृढ़ता के साथ वर्तमान में भी प्रकाशमान है।

सर जदुनाथ सरकार जाट शक्ति का वर्णन करते हुये कहा है– "उस विस्तृत भूभाग का जो सिंध नदी के तट से लेकर पंजाब, राजपूताना के उत्तरी राज्यों और ऊपरी यमुना घाटी में होता हुआ चम्बल के पार ग्वालियर तक फैला है सबसे बड़ा जातीय तत्व है"।[2]

चारित्रिक दृष्टि से जाट कठोर, अकल्पनाशील, भावुकता से परे, व्यवहारिक एवं तात्कालिक बुद्धि के साथ हठीलता एवं दृढ़ निश्चयी है। ठोस तथ्यों के अभाव में केवल शब्दों से उसे कठिनाई से ही समझाया जा सकता है। प्रबल स्वतन्त्रता और धैर्यशील, कठोर श्रम उसके अच्छे गुण हैं। प्रतिद्वन्दी के साथ संर्घष में उसका जातीय गठबंधन काफी मजबूत रहता है जाट मिट सकते हैं, लेकिन अपने दुश्मन के सामने झुक नहीं सकते।

जोजेफ डेवी कनिंघम ने लिखा है कि "उत्तर और पश्चिम भारत के जाट बड़े परिश्रमी और सफल कृषक हैं वे खेती करने और शस्त्र चलाने में एक जैसे निपुण हैं भारत की ग्रामीण आबादी में जाट सबसे श्रेष्ठ नागरिक हैं"।[3]

पं0 जवाहर लाल नेहरू ने जाटों के सम्बंध में कहा है "मैं यू0 पी0 प्रान्त के उत्तरी तथा पश्चिमी जिलों के प्रबल जाटों के बारे में जानता हूँ। वे मातृ भूमि के आदर्श पुत्र, बहादुर, स्वतंत्र स्वभाव वाले तथा बहुत उन्नतिशील हैं।"[4] आगे लिखते हैं– "भारत वर्ष में जाटों से बढ़कर कोई दूसरा अधिक शक्तिशाली तथा श्रेष्ठ किसान नहीं हैं वे अपनी भूमि के प्रति समर्पित हैं इसके सम्बंध में किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप सहन नहीं कर सकते।"[5]

प्रो0 कानूनगों के शब्दों में "चारित्रिक गुण में जाट प्राचीन आंग्ल सेक्सन तथा प्राचीन रोमवासियों की तरह रहन–सहन, सोच विचार कर मंदगति से आगे बढ़ने वाला, कल्पना – भावुकता तथा तड़क–भड़क से शून्य होने पर भी दृढ़ विचारक, शक्ति सम्पन्न, धैर्यवान अथवा प्रयत्नशील और अपने विचारों को विशिष्ट रूप से सुरक्षित रखने वाले हैं। शब्द प्रमाण आनुमानिक तर्क की अपेक्षा ठोस क्रियात्मक कदम उठाने वाले और निश्चयात्मक प्रमाण के आधार पर निश्चित निर्णय लेने में सक्षम हैं।"[6]

आधुनिक प्रसिद्ध सामाजिक एवं राजनैतिक स्तम्भकार खुशवंत सिंह ने इस प्रसिद्ध जाति के विषय में लिखा है "जाट जन्म–जात श्रमिक एवं योद्धा था वह कमर में तलवार बॉधकर खेत में हल चताता था। अपने घर –बार की रक्षा के लिये वह क्षत्रिय की अपेक्षा कहीं अधिक लड़ाईयॉ लड़ता था, क्योकि क्षत्रिय के विपरीत, आक्रमणकारियों के आने पर जाट अपने गॉव को छोड़कर शायद ही कभी भागता हो और हिन्दुस्तान की ओर जाते किसी विजेता की ओर से जाट के साथ दुर्व्यवहार किया जाता, या उसकी स्त्रियों से छेड़खानी की जाती, तो उसका बदला वह आक्रमणकारी के काफिलों का लूट कर लेता था। उसकी अपनी खास ढ़ंग की देशभक्ति विदेशियों के प्रति शत्रु तापूर्ण और साथ ही अपने उन देशवासियों के प्रति दयापूर्ण, यहॉ तक कि तिरस्कार पूर्ण थी, जिनका भाग्य बहुत कुछ उसके साहस और धैर्य पर अवलम्बित था।"[7]

इस महान जाति की उत्पत्ति राजपूतों की ही तरह विवादग्रस्त विषय है। महान जाट शक्ति की उत्पत्ति के विषय में पौराणिक कथाकारों, उनके प्रशस्तिकारों, झगाओं, धार्मिक ग्रन्थकारों एवं इतिहासकारों ने अपने–अपने विचार दिये है। जिन्हें निम्न सिद्धांतों के आधार पर स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है

पौराणिक कथाओं पर आधारित जाटों की उत्पत्ति का सिद्धान्त–

जाटों की उत्पत्ति के विषय में कई पौराणिक कथायें हैं। यह आज भी भारतीय हिन्दू समाज में प्रचलित हैं तथा इनका आधार वेद, पुराण एवं संहितायें हैं जो कि हिन्दू या वैदिक संस्कृति का आधार हैं–

1 – महादेव जी के श्वसुर कनखल[8] के राजा दक्ष ने यज्ञ रचा और प्रायः सभी देवताओं, ऋषियों और राजाओं को यज्ञ में शामिल होने का निमंत्रण दिया परन्तु न तो महादेव जी को ही बुलाया और न ही अपनी पुत्री सती को ही निमंत्रित किया। उस समय शिवजी ऋषिकेश के पास ही गंगा किनारे योग साधाना में रत थे और सती जी उनके साथ थी। पिता का यज्ञ समझ कर सती जी बिना निमंत्रण के पहुॅच गयी किन्तु जब वहॉ उसने देखा कि यज्ञ में उसके पति एवं उसका भाग निकाला नहीं गया है तथा उसका भी उचित सत्कार नहीं किया जा रहा है इसलिए उसने वहीं प्राणन्त कर लिया। महादेव जी को जब यह समाचार मिला तो उन्होने दक्ष और उसके सलाहकारों को दण्ड देने के लिये अपनी जटा से वीरभद्र नामक गण पैदा किया। वीरभद्र ने अपने अन्य साथी गणों के साथ आकर राजा दक्ष का सिर काट लिया और उसके साथियों को भी पूरा दण्ड दिया। इस प्रकार शिव की जटा से उत्पन्न होने के कारण यह जाट कहलाये।[9] यह वर्णन संस्कृत पुस्तक देवसंहिता में भी है जिसमें आगे लिखा है विष्णु ने आकर शिव जी को प्रशन्न करके उनके वरदान से दक्ष को जीवित किया। तत्पश्चात राजा दक्ष और शिव जी में समझौता कराने के बाद शिव जी से प्रार्थना की कि आप अपने मतानुसार जाटों का यज्ञोपवीत संस्कार क्यों नहीं करा लेते? ताकि हमारे आपके भक्त वैष्णव और शैव में कोई झगड़ा न रहे। लेकिन शिव जी ने विष्णु की इस प्रार्थना पर यह उत्तर दिया कि मेरे अनुयायी ही प्रधान हैं।[10] इसी सन्दर्भ में जाटों की उत्पत्ति विषयक प्रसंग भी है जो देवसंहिता में वर्णित है–

पार्वत्युवाचः
भगवन सर्वभूतेश सर्व धर्मविदांबर। कृपयां कथ्यतां नाथ जाटानां जन्म कर्मजम्।।

अर्थ – पार्वती ने कहा – हे भगवान! हे भूतेश! हे सर्वधर्म विशारदों में श्रेष्ठ! हे स्वामिन! आप कृपा करके जाट जाति का जन्म एवं कर्म कथन कीजिये।

का च माता पिता का जार्तिवेद कि कुलम। कस्मिन काले शुभे जाता प्रश्नानतान वद प्रमो।।

अर्थ – हे शंकर जी। इनकी माता कौन है, पिता कौन है, जाति कौन है, किस काल में इनका जन्म हुआ है।

श्री महादेव उवाचः

श्रृणु देवि जगद्वन्दे सत्यं सत्यं वदापिते। जटानां जन्म कर्माणि यत्र पूर्व प्रकाशितं।।

अर्थ– महादेव जी ने पार्वती जी से कहा है जगजननी भगवती जाट जाति के जन्म कर्म के विषय में उस सम्यता का वर्णन करता हूँ जो अभी तक किसी ने प्रकाशित नहीं की।

महाबला महाबीर्या महासत्व पराक्रमाः। सर्वाग्रे क्षत्रिया जटटा देवकल्पा दृढ़व्रताः।।

अर्थ– शिव जी बोले कि जटृ महाबली, अत्यन्त वीर्यवान और प्रचण्ड पराक्रमी है। सम्पूर्ण क्षत्रियों में यही जाति सर्वप्रथम पृथ्वी पर शासक हुयी। यह देवताओ के समान दृढ़ प्रतिज्ञा वाले हैं।

सृपटेरादौ महामाये वीरभद्रस्य शक्तितः। कन्यानां दक्षस्य गर्भे जाता जट्टा महेश्वरी।।
सृष्टि के आदि में वीरभद्र की योगमाया के प्रभाव से दक्ष की कन्याओं से जाटों की उत्पत्ति हुयी।
गर्वश्वर्तोण्त्र विप्रनां च महेश्चरी।
विचित्रं विस्मयं सत्यं पौराणिकैः संगोपितम्।।[11]

अर्थ–शंकर जी बोले हे देवि। जटृ जाति का इतिहास अत्यंत विचित्र एवं आश्चर्यमय है इनके इस शानदार इतिहास से ब्राह्मणों और देवताओं के मिथ्याभिमान का विनाश होता है। इसीलिये इस जाति के इतिहास को पुराणों के लिखने वालों ने अभी तक छिपाया हुआ था।

उपर्युक्त कथनानुसार जय से वीरभद्र व सेना का गण उत्पन्न होना असम्भव जान पड़ता है अतः इसमें सच्चाई नहीं हो सकती।

महाभारत के कुछ अध्यायों में पंजाब और सिंध को – जिन्हें ऐतिहासिक काल में जाटों की गृहभूमि कहा जा सकता है – विभिन्न जनजातियों का उल्लेख है। जिनमें एक जरत्रिका और दूसरी मद्रक जातियों का वर्णन है– दोनों बाहिका थे अर्थात यहॉ बाहर से आये थे। सर जेम्स कैम्पबैल ग्रियर्सन का कहना है कि संस्कृत साहित्य में यह जाटों का सबसे पहला उल्लेख है।[12]

2 – महाभारत में साकाल के जाटित्का का वर्णन है। पूना के प्रसिद्ध इतिहासकार श्री चिन्तामणि विनायक वैद्य इन्ही जरित्काओं को जाट मानते हैं।[13] महाभारत के कर्ण पर्व में जाटित्का और सांकाल नगरी का वर्णन युद्ध के समय कर्ण ने किया है। कर्ण, शल्य को उलाहना देता है– कि तेरे देश की स्त्रियां खड़ी होकर पेशाब करती हैं, वे ऊंट की तरह चिल्ला–चिल्ला कर गीत गाती हैं। लहुसन के साथ गौमांस भी तेरे देश के सांकाल नगरी का एक जटित्का खाता है। वह बहुत सी स्त्रियों के साथ रमण करता है। मैने यह वर्णन एक ब्राह्मण के मुख से सुना है जो तेरे देश में गया था और उसका कोई सत्कार नहीं हुआ था। उसने कौरवों की सभा में यह वर्णन किया था। अरे शल्य! ऐसे देश का स्वामी होकर भी तू मुझसे बढ़–बढ़कर बातें करता है? सी.वी.वैद्य ने जाटित्का के सम्बंध में इस वर्णन को अतिरंजित बताया है और इसी जटित्का को तथा उसके समूह को जाट माना है। वह कहते हैं यह वर्णन एक व्यक्ति का है जाति का नहीं। बहुत सम्भव है वह पुरूष जरत्कास हो जा कि उस समय का एक ऋषि था और वह बहुत सी स्त्रियों के सहगमन करता था।[14] कालिका रंजन कानूनगो ने वैद्य के इस मत का खण्डन किया है कहा है कि जाटों को जार्तिकाओं का वंशज कहना असत्यता की बात है।[15] सुख सम्पतराम भण्डारी तथा यदुनाथ सरकार ने भी सी.वी.वैद्य के इस मत का खण्डन किया है। इस प्रकार जटित्का को जाट मानना और उस पर अभद्र आदतों का आरोपण करना उसी शरारती मस्तिष्क का षणयन्त्र है जिसमें अपने विरोधियों को मलेच्छ, असुर, राक्षस, चाण्डाल तथा नपुंसक इत्यादि कहा गया है।

3 – सिंध रियासत के गांधार प्रदेश में पैदा होने वाले व्याकरण सूर्य महर्षि पाणिनि ने अष्टाध्यायी व्याकरण में लिखा है कि "जट् झट् संघात"। जट शब्द समूह या एकता के लिये प्रयोग किया जाता है। जट शब्द का अर्थ है जुटाना या बिखरी हुयी शक्तियों को एकत्रित करना। जट् का ही दूसरा रूप जाट है यह दोनो एकार्थवादी हैं।[16]

4 – एक अन्य रोचक कथा राजपूत और गुर्जर जातियों के मिश्रण से जाटों की उत्पत्ति स्वीकार करती है। कथा इस प्रकार वर्णित है – एक गुर्जर के सौन्दर्य तथा शक्ति से प्रभावित होकर एक राजपूत राजा ने उससे विवाह कर लिया। इन्हीं की संतान जाट कहलायी। यह कथा काल्पनिक प्रतीत होती है। यह इसलिये महत्वपूर्ण है कि इससे राजपूतों एवं जाटों के सम्बंधों की स्थापना होती है।[17]

शारीरिक बनावट एवम् भाषायी आधार –

मानवशास्त्रियों ने भारत के विभिन्न लोगों की वंशावली प्राप्त करने के लिये वैज्ञानिक उपकरणों का सहारा लिया उन्होंने विभिन्न लोगों की खोपड़ियॉ एवं नाकें नापनी प्रारम्भ की। हरबर्ट रिसेल ने शरीरिक बनावट की दृष्टि से भारतीय लोगों को सात मुख्य समूहों में व्यक्त किया है। इनमें द्वितीय इण्डो आर्यन शैली है, जो पंजाब राजपूताना व कश्मीर में है, और राजपूत, खत्री तथा जाट इसके चारित्रिक सदस्य हैं। इस प्रकार इण्डो – सीथियन सिद्धान्त पर यह प्रथम वैज्ञानिक प्रहार था।[18] वर्तमान में पंजाब व राजपूताना में इनका अस्तित्व एक निश्चित शरीरिक बनावट लिये हुये है, जिनका प्रतिनिधत्व जाट व राजपूत करते हैं इनकी विशेषता अपेक्षाकृत लम्बा सिर, सुन्दर सपाट नाक, लम्बा कद एवं आकृति की सामान्य बनावट है। पूरे समूह में चमड़ी का प्रभावी रंग हल्का साफ भूरा है।[19] रिसेल आगे लिखते हैं कि सिथियन मत का आधार फिल्मी सादृश्यता तथा संदिग्ध धारणा है जिसमें जाटों की पहचान हेरोडोटस के गेटे के साथ की गयी है। इस तथ्य से अलग कि नामों की साम्यता अधिकतर भ्रान्ति पैदा करती है। उदाहरण स्वरूप गेटे की रोमन पहचान गोथ के साथ की जाती है।[20]

समस्त प्रतिष्ठित विद्धानों का यही मत है कि सच्चे आर्य प्रमाणित होने के लिये आवश्यक शारीरिक बनावट एवं भाषा सम्बन्धी परीक्षणों में जाट खरे उतरे हैं।[21] सर हेनरी, एम. इलियट ने "डिस्ट्रीव्यूशन ऑफ द रेसेज ऑफ द नार्थ – बेस्टर्न प्राविन्सेज ऑफ इण्डिया" में कहा है कि "कराची से पेशावर तक जाट शेष जातियों से पृथक नहीं है, भाषा से जो अर्थ निकाला गया है वह उनके आर्य होने के पक्ष में एक जोरदार तर्क देते हैं। यदि वे सिथियन हैं तो सिथियन भाषा कहां लुप्त हो गयी? चूंकि इस क्षेत्र में जाटों की भाषा में किसी भी प्रकार सिथियन होने का प्रमाण नहीं मिलता।" [22]

जाटों को आर्यों का वंशज मानकर मि0 नैस्फील्ड ने स्पष्ट किया है "यदि शक्ल सूरत समझे जाने वाली चीज है तो जाट, आर्यों के अतिरिक्त कुछ हो ही नहीं सकते।"[23] 1901 की जनगणना के आधार पर सर एच0 रिजले साहब ने स्पष्टतः किया है कि "जाट शरीरिक बनावट के अनुसार आर्य हैं।"[24]

जठरोत्पत्ति की परिकल्पना–

जिस प्रकार से यूरोपीय विद्वानों ने साहित्यिक उल्लेखों, शरीरिक बनावट एवं भाषायी समानमा पर आधारित मत प्रकट किये हैं उसी प्रकार कुछ भारतीय विद्वानों ने भी यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि जाटों का सम्बन्ध क्षत्रिय वर्ण की योद्धा जाति से है। पं0 अंगद प्रसाद शास्त्री ने सन 1872 ई0 में जठरोत्पत्ति नामक संस्कृत पुस्तक जाटों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में लिखा है।

जठरों (जठर जनजाति) की उत्पत्ति के बारे में पदम पुराण में इस प्रकार उल्लेख मिलता है। जब परशुराम ने शूरवीर वर्ग क्षत्रिय का 21 बार विनाश किया। इस प्रकार पृथ्वी क्षत्रिय विहीन हो गयी तब क्षत्रिय कन्यायें पुत्र प्राप्ति की कामना के लिये ब्राह्मणों की शरण में गयी। इन क्षत्राणियों के पेट से पैदा होने के कारण वे सन्तानें जाठर कहलायी।[25] पं0 अंगद प्रसाद शास्त्री के मत का समर्थन चौधरी लहरी सिंह, मेरठ ने अपनी लिखित पुस्तक "द इन्थनोलॉजी ऑफ द जाट्स" में किया है। यह लेखक भी जाट शब्द की उत्पत्ति जठर से लिखता है परन्तु उसने जाटों को विदेशी कहा है। पं0 अंगद प्रसाद शास्त्री ने अपनी इस पुस्तक में बृहत संहिता (xiv - 8) का उदाहरण दिया है। उसी से उसकी जठरोत्पत्ति का सिद्धान्त धाराशायी हो जाता है। उसने जठरों का निवास दक्षिण पूर्व में बतया है जबकि यह प्रमाणित हो चुका है कि जाट, पश्चिम से भारत में आये थे।[26]

चौधरी लहरी ने जाटों को विदेशी कहा है जबकि पं0 अंगद प्रसाद शास्त्री इन्हें भारत के दक्षिण–पूर्व से आया हुआ मानते हैं जठर नाम में समानता अवश्य है परन्तु दोनों ही एक–दूसरे के विपरीत हैं। अगर यह मान भी लिया जाये कि जाठर शब्द कालान्तर में जाट में विलीन हो गया हो किन्तु सबसे विचित्र बात यह है कि इस प्रकार का तथ्य पहले कभी भी उल्लेखित नहीं हुआ।[27] शास्त्री जी के मत का सटीक उत्तर देते हुये कानूनगो स्पष्ट करते हैं कि केवल शब्दों के एक सा उच्चारण के कारण ही यह नहीं माना जा सकता कि जाट शब्द जठर या जाठर से बना है। यदि आज दक्षिण–भारत से जठर जाति पूर्णतया विलुप्त हो जाती तो कोई भी जाट के साथ बिना किसी सम्पर्क का दावा करते हुये दक्षिण–भारत में उपस्थित है। यह जाथर दक्षिणी मराठा ब्राह्मणों की एक उप जाति है जा करहड के नाम से जानी जाती है।[28] यह तर्क कि ब्राह्मण एवं क्षत्राणियों के संसर्ग से उत्पन्न सन्तान जाठर कहलायी सारहीन है। क्योंकि सिद्धान्त तो यह है कि ब्राह्मणों के वीर्य से पैदा होने वाली सन्तान ब्राह्मण कहलाती हैं। अन्ततः स्पष्ट है कि यह बातें असत्य हैं।

यादव से जाट उत्पत्ति का सिद्धान्त–

जाट लोगों का दृढ़ विश्वास है कि वह प्राचीन आर्यों की यादव शाखा से है। अपने इस विश्वास को प्रमाणित करने के लिये उन्होंने अभी तक इतिहासकारों के समक्ष कोई भी ठोस प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया है। जाटों की परम्परा

सिंधु के पश्चिम क्षेत्र में अपना उद्गम और अपने का यदुवंशी मानती है।[29] यदि हम थोड़ी देर के लिये जाट शब्द की उत्पत्ति के लिये यादव शब्द को ही ले लेते हैं तो कठिनाई नहीं होगी इसे वैज्ञानिक तुला पर तौलने के उपरान्त ही स्वीकार एवं अस्वीकार करना उचित होगा। 11 वीं शती में अलबरूनी श्री कृष्ण के जन्म के सम्बंध में लिखता है, "तब मथुरा नगर में शासक कंस की बहन से वासुदेव के यहां एक बच्चे का जन्म हुआ। वह जाट जाति से था। यह पशु पालते थे और छोटे दर्जे के शूद्र मनुष्य थे।[30] पॉचवीं शताब्दी का एक अभिलेख उनके 36 राजकुलों में होने और उनके यदुवंशी होने के दावे को सुदृढ़ता प्रदान करता है। विष्णु पुराण से ज्ञात होता है कि यद्यपि यादव लोग 11 वीं शताब्दी के जाट शूद्र के दर्जे से कुछ ही श्रेष्ठ थे परन्तु लगभग उस दर्जे के समीप ही पहुंच रहें थे। जाट सदैव गणतंत्र प्रणाली के पोषक और धर्मान्धता से दूर रहे। इसी कारण श्री कृष्ण के वंशजों को भी धार्मिक एवं पौराणिक पुस्तकों में उचित स्थान नहीं दिया गया है।[31] इसलिये यह सम्भव प्रतीत होता है कि यदु अथवा यादव से जट या जट्ट बन गये हों।

यह भी सम्भव है कि जाट शब्द सुजात अथवा जात से बना है। क्योंकि हैहय क्षत्रियों में सुजात तथ जात नाम की दो शाखायें थी। उन्हीं दोनों शाखाओं के वंशज जाट हो गये। इसके विरोध मे यह तर्क दिया जा सकता है कि हैहयों का निवास में नर्मदा के किनारे था। जबकि जाट सदा से पश्चिमी भारत के निवासी रहे हैं। इसीलिये उन्हें वर्तमान जाटों का पूर्वज नहीं माना जा सकता क्योंकि वे मुख्यतः सिंध एवं पंजाब में पाये जाते है। इस सम्बंध में यह कहा जा सकता है कि जाटों की आज भी नर्मदा घाटी, भोपाल तथा अन्य स्थानों पर संख्या कम नहीं है।[32] हैहयों का उल्लेख पश्चिम के लोगों के रूप में बृहत संहिता में हुआ है।[33]

प्राचीन यादवों की आधुनिक जाटों के साथ तुलना कबीलायी स्थिति की एक समान विशेषता दृष्टिगोचर होती है। जिस प्रकार यदु की संतति को बहुप्रजा, अण्डक, भोज, कुकर, दर्शणा आदि विभित्र कबीलों की सम्बद्धता द्वारा मिश्रित यादव जाति उभरती है, उसी प्रकार जाटों में भी सिनसिनवार, सोगर, खूंटेल, तेनवा, देशवाल आदि विभिन्न गोत्रों की उत्पत्ति की पृथक परम्परायें हैं जो मिलकर जाट जाति को एकरूपता प्रदान करती है। उदाहरणस्वरूप डेरा गाजी खान के बब्बर भी अपने को जाट कहते हैं।[35] जो स्पष्ट रूप से यदुवंश से सम्बद्ध बाहरी प्रदेश के लोग थे। इसका समर्थन भागवत पुराण के एक श्लोक से होता है जिसमें कहा गया है कि राजा सागर ने हैहयों का नाश करने के बाद शक, यवन और बरबरों के विरूद्ध शस्त्र उठाये, जो हैहयों के मित्र के रूप में उसके पूर्वजों के विरूद्ध लड़े थे।[36]

एक अन्य के सन्दर्भ में परशुराम के हाथों यदु मुल वंश के लोगों को भयानक प्रतिशोध भुगतना पड़ा। उन्होंने नास्तिक आततायी योद्धा जाति को लगभग समाप्त कर दिया था। इनमें से कुछ ने भागकर पहाड़ों में शरण ली और कुछ ने अपने को निम्न जातियों में विलीन करके छिपा लिया था। उदार ऋषि कश्यप ने उन्हें पुनः क्षत्रिय के रूप में मान्यता प्रदान की। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि कश्यप गोत्री जाटों की जो अपने में राजपूत रक्त होने का दावा करते हैं, उत्पत्ति प्राचीन यादवों से हुयी है और इस गोत्र का नाम उस महात्मा का उनके प्रति किये अनुग्रह के कारण कश्यप पड़ा।[37]

यदि जाट मूलतः यदु थे तो इन्होंने जाट नाम कब और क्यों धारण किया। उसकी प्रमाणिक व्याख्या ठीक उसी प्रकार से नहीं की जा सकती जिस प्रकार से क्षत्रियों के राजपूत कहलाने के बारे में स्पष्ट रूप से नहीं कहा जा सकता। टॉड महोदय ने इसका कारण स्पष्ट करते हुये बताया है कि यदु वंश शाखाओं ने जाटों के साथ अन्तर्विवाह किया उस कारण उनका सामाजिक दर्जा कम हों गया और उनकी मिश्रित संतान ने माता का नाम ग्रहण कर लिया होगा।[38]

इण्डो–सिथियन मत एवं इण्डो–आर्यन मत का सिद्धान्त–

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर यह माना जा सकता है कि जाट शब्द जदु, यदु, जात, सुजात से ही निकला है इसकी उत्पत्ति की खोज की मान्यता को और अधिक प्रमाणिक बनाने के लिये विद्वानों को प्रयत्न करना चाहिये। मथुरा मेमोयर्स के लेखक ग्राउस साहब ने अपना इतिहास न लिखने के कारण जाटों की अच्छी आलोचना की है।

इण्डो सीथियन मत के प्रतिपादक जेम्स टॉड भारतीय जाटों की पहचान मध्य एशिया के गेटे से करता हुआ लिखता है यह (युह–ची जिहुन ऑक्सस) के साथ –साथ वैक्ट्रिया में स्थापित हो गये और कालान्तर में जता या येतान नाम धारण कर लिया जिसे गेटे कहते हैं यूनानियों ने इन्हें ही इण्डोसीथियन कहा है।[39] टॉड महोदय ने आगे यहां तक कह दिया है भारत के जाटों, रोमन साम्राज्य के गेथों तथा जटलैण्ड के जटों के बीच रक्त सम्बंध पाये जाते हैं। इस सिद्धान्त ने विद्वानों की अनेक पीढ़ियों को व्यापक रूप से प्रभावित किया है जाट कबीलों के नाम विद्वानो के कानो में आक्सस क्षेत्र गैट, यूटी और येथा की तरह ध्वनित हुआ है। अपने कथन की पुष्टी में वह डी जिगने की अधिकारिक सूचना का हवाला देते हुए बताता है जिसमें सिंधु पर सिथियन उत्पत्ति के विषय में जानकारी दी गयी है और स्पष्ट किया है कि वे हिन्दू जातियों में मिश्रित नहीं हुये। ईसा के प्रारम्भिक वर्षो में युह–ची सिंध मं आकर बसे। उनका अब भी नाम जीत या जाट है और वर्तमान में भी यह सिंधू नदी के दोनों के किनारे पर काफी संख्या में हैं।[40] इलियट महोदय

ने भी विदेशी परम्परा का समर्थन करते हुये लिखा है कि सिंधु एवं भरतपुर के जाट एक ही उत्पत्ति से है।[41] कनिंधम इन्हें स्ट्रेवो के जन्थी तथा प्लीनी व टॉल्मी के जती से पहचान करता है और यह मान्यता रखता है कि ईसवी सन के प्रारम्भ में ऑक्सस के अपने स्थान से पंजाब में प्रविष्ट हुये थे।[42]

विदेशी इतिहासकारों में प्रमुख रूप से स्मिथ ने जाटों को हूणों की संतान निरूपित किया है। उनके अनुसार विजेता हूणों मे से जिनके पास राजशक्ति आ गयी वे राजपूत, जो कृषि कार्य करने लगे वह जाट और गुर्जर है।[43] एक दूसरे स्थान पर उसने लिखा है इस बात पर विश्वास करने का कारण है कि जाट भारत में गूजरों के बाद में आये शायद लगभग उसी समय[44] इण्डो सीथियन मत का समर्थन करते हुये यू0 एन0 शर्मा ने लिखा है कि भारतीय सीमाओं का भौगोलिक अंग होने के बाद भी भारतीय आर्य जातियों के प्रतिनिधियों के सिंधु पंच प्रदेश में जाकर बसने के कारण ही उन्हें इण्डो सीथियन या विदेशी प्रमाणित करने का प्रयास किया गया है।[45] मेजर विंगले लिखते हैं कि ईसा की प्रथम शताब्दी में जाट लाग ऑक्सस के किनारे से चलकर दक्षिणी अफगानिस्तान होकर भारत आये।[46]

सर्वप्रथम भाषा वैज्ञानिकों ने भी गैट और येथ की तरह सभी ध्वनित शब्दों के विरूद्ध अपना विरोध दर्शाया है। डॉ0 ट्रम्प और बीम्स ने शक्तिशाली शब्दों में उन दोनों जातियों को उनकी शरीर की बनावट और भाषा के आधार पर शुद्ध हिन्दी की एक बोली है जिसमें सिथियन भाषा की लेश मात्र भी झलक नहीं हैं, परन्तु विज्ञान ने उन्हें बढ़ने से रोक दिया है तथा स्पष्ट किया है कि भाषा जाति का प्रमाण नहीं है।[47] इण्डो–सिथियन सिद्धान्त के प्रतिपादाकों को ईमानदारी के साथ यह तथ्य स्वीकार करना चाहिये कि यदि मध्य एशिया के गैट किसी प्रकार आर्यन जदु अथवा जाट बन गये तो उल्टी प्रक्रिया से भारतीय जदु भी मध्य एशिया में बन जाना चाहिये था।[48]

इस सिद्धान्त के विपरीत श्री सी0पी0वैध ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि अन्त में हम जाटों के सम्बंध में कुछ लिखना चाहते है कि उनके मानव तत्व अनुसंधान के लक्षण जैसा कि हम देख चुके हैं साफ तौर से आर्य है। वह सुंदर, लम्बे व ऊची नाक वाले हैं। क्या उनका इतिहास इन्हें अनार्य बताता है।[49] प0 विद्यावाचस्पति अपनी पुस्तक में स्पष्ट करते हुये लिखते हैं कि जब से जाटों का वर्णन मिलता है वे भारतीय ही हैं और यदि भारत के बाहर कहीं भी उनके निशान मिलते हैं तो भी भारत से ही गये हुये हैं।[50] इतिहासकार मिलर का विचार है कि जाटों को सिथियन प्रमाणित करने के लिये पर्याप्त शक्ति का प्रयोग किया गया है।[51]

ध्वनिगत समानता का खण्डन करने के बाद गेटिक उत्पत्ति के विरूद्ध जो सबसे महत्वपूर्ण आपत्ति सामने आयी है वह यह है कि उनका नाम भरत के 36 राजकुलों की सूची में है इसलिये वे शुद्ध हिन्दूओं की श्रेणी में आते हैं। कर्नल टॉड इण्डों–सिथियन मत के समर्थन में कहते हैं यद्यपि उनका नाम सूची में है तो भी वह कभी भी राजपूत नहीं माने गये और कोई भी राजपूत उनके साथ विवाह सम्बंध स्थापित नहीं करता।[52] इसके साथ–साथ राजपूत एवं जाटों की परस्पर वैमनष्यता अत्यधिक सन्देह पैदा करती है कि सहयोगात्मक रूप में भारत में कभी इनका पदार्पण हुआ होगा जैसा कि इस मत में स्पष्ट किया गया है। हम प्रत्येक स्थान पर पातें हैं कि भूमि पर अधिकार करने वाले प्रारम्भिक जाटों का स्थान नवीन राजपूत शरणार्थियों ने ले लिया था। परमारों ने उन्हें मालवा से हटा दिया तथा तॅवरों ने दिल्ली से विमुख कर दिया । भाटियों नें उनसे बीकानेर एवम जैसलमेर प्राप्त कर लिया।[53]

पंजाब के लगभग सभी जाट गोत्रों की परम्परा पूर्व या दक्षिण –पूर्वी राजपूताना एवं केन्द्रीय प्रान्तों को अपने मूल स्थान में इंगित करती है।[54] लोक परम्परा के आधार पर भी जाट इण्डो–आर्यन है जो पूर्व से पश्चिम की ओर निष्क्रमित हुये न कि इण्डो सिथयन जो कि आक्सस घाटी से उतरे थे। निसन्देह जाटों का एक निश्चित वर्ग भाटियों के साथ भारत से बाहर निष्क्रमित हुआ और अनेक शताब्दियों के पश्चात ईरान की सीमाओं से होकर सिंधु के पूर्व में पुनः प्रविष्ट हुआ। क्या इस प्रकार उन्हें विदेशी आक्रांता कहा जा सकता है अर्थात नही कहा जा सकता।[55]

प्रमाणिक इतिहास की कमी ने जाटों को उनके स्थान से गिरने में बहुत सहायता दी है। मथुरा में मेमायर्स के लेखक मि0 ग्राउस ने जाटों को अपना इतिहास न लिखने पर काफी फटकार बताई है। वास्तव में उनकी कोई इतिहास पुस्तक न पाकर दूसरे लोगों ने जैसा उन्होंने सुना या बताया गया वह लिखने को विवश हुये। यह सिद्ध करना कुछ भी कठिन नहीं है कि जाट इण्डो–आर्यन है जिन्हे किसी –किसी इतिहासकार व गजेटियर के सम्पादक ने इण्डो – सिथियन लिख दिया है। चूकिं वे जाटों के भरतीय इतिहास से अनभिज्ञ थे।

मेजर जगदीश सिंह गहलोत ने जाटों के भारतीय होने के क्रम में एक नवीन कड़ी जोड़ते हुये लिखा है यदि राजपूत अपनी वीरता व साहस के लिये प्रसिद्ध रहे हैं तो जाट उनसे किसी भी भॉति कम नहीं रहे। जाट जाति सम्पूर्णतया भारतीय एवं आर्य हैं।[56] इसी क्रम में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी जाटों को विशुद्ध आर्य माना है। तभी उन्होंने जाट जी एवं पोप जी की घटना काएक उदाहरण देकर जाटों का सम्मान किया है।[57]

निष्कर्षतः जाटों की इण्डो सिथियन उत्पत्ति को तो चुनौती भाषायी एवं शरीरिक बनावट के आधार पर दी जा सकी है। लेकिन जाटों की इण्डों आर्यन उत्पत्ति को चुनौती भाषायी एवं शरीरिक बनावट के आधार पर नहीं दी जा

सकती तब उनके यदुवंशी परम्परा[58] की विवके संगत मान्यता को इस आधार पर स्वीकार किया जा सकता है कि असमें कालक्रमानुसार बाहरी जातियॉ शामिल हो गयी होंगी। स्पष्ट है कि जाट न तो हूणों की संतान है और न ही शक–सिथिनों की बस वह विशुद्ध रूपेण आर्य सन्तति हैं।

संन्दर्भ–

1. डॉ धर्मचन्द्र विद्यालंकार : जाटों का नया इतिहास, पृ0 24।
2. सर जदुनाथ सरकार : फॉल ऑफ द मुगल एम्पायर, खण्ड 2।
3. जोसेफ डेवी कनिघम : सिक्खों का इतिहास – पृ0 12।
4. पं0 जवाहर लाल नेहरू : डिस्कवरी ऑफ इण्डिया – पृ0 58।
5. उपरोक्त : पृ0 145–146।
6. कानूनगों : जाटों का इतिहास – पृ0 1–2।
7. खुशवंत सिंह : हिस्ट्री ऑफ दा सिख्स – खण्ड – प्रथम, पृ0 15–16।
8. यह स्थान हरिद्वार के निकट है।
9. शिव पुराण : अध्याय 25। दक्ष प्रजापित का मंदिर कनखल में आज भी है । जिसकी दीवारों पर चित्रात्मक रूप में यह कथा है।
10. विस्तृत विवरण के लिये देव संहिता भी देखें।
11. विस्तृत विवरण के लिए देखें : देवसंहिता – श्लोक – 12 – 17 तक।
12. सर जेम्स कैम्पबेल उन्हें विदेशी मानता है–जिन्होंने कुश झुण्डों के साथ जिनका सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि कनिष्क था 150 और 100 ई0 पूर्व में भारत में प्रवेश किया। ग्रियर्सन उन्हें भ्रष्ट आर्य मानता है, काफिर नहीं। बारह मिहिर ने दो प्रकार के लोगों का उल्लेख किया है–जटासुर उत्तर पूर्व में और जटाधार कावेरी के निकट दक्षिण में। इनकें नाम ग्रियर्सन के विद्धतापूर्ण कानों मे जाट जैसे ध्वनित हुए होंगे। देखियें वृहत संहिता, प्रथम भाग, पृष्ठ, 293–299।
13. सी0वी0 वैद्य : महाभारत भीमांसा।
14. महाभारत : कर्ण पर्व, अध्याय 44, श्लोक, 4–12।
15. कानूनगों : जाटों का इतिहास – पृ0 5–7।
16. डॉ धर्मचन्द्र विद्यालंकार : जाटों का नया इतिहास, पृ0 10।
17. गरीश चन्द्र द्विवेदी : जनरल ऑफ इण्डियन हिस्ट्री, पृ0 378।
18. हरबर्ट रिसले : पीपुल्स ऑफ इण्डिया – पृ0 33।
19. उपरोक्त : पृष्ठ 40। ई0बी0 हैवल : द हिस्ट्री ऑफ आर्यन रूल्स इन इण्डिया–पृष्ठ 32।
20. हरबर्ट रिसले : पीपुल्स ऑफ इण्डिया, पृ0 60–61।
21. आर0पी0 चन्दा : इण्डो आर्यन रेसेज, पृष्ठ 78।
22. देशराज जघीना : जाट इतिहास, पृष्ठ 64।
23. डॉ धर्मचन्द्र विद्यालंकार : जाटों का नया इतिहास, पृ0 21।
24. 1901 : जनगणना रिपोर्ट : सफा 500।
25. क्षत्र व शून्ये परालोके मार्गवेन यदाकृते। विलोक्या क्षत्रियों धावी कन्यास्तेषां सहस्त्रशः ।
    ब्राह्मणान जगृहुस्तास्मिन पुत्रोत्पादन लिप्सया। जट्ठरे पारित गर्भ संरक्ष्य विधिवतपुरा।
    पुत्रानां सुषसिरे कन्या जाठरान क्षत्रवंशमान। संस्कृत मे पेट को जठर कहते हैं।
26. कानूनगों : जाटों का इतिहास – पृ0 7–8।
27. एफ0एस0 ग्राउस : मथुरा–ए डिस्ट्रिक्ट मेमोयर, भाग – 1 पृष्ठ 21–22।
28. कानूनगों : जाटों का इतिहास – पृ0 – 8।
29. वाल्टर हेमिल्टन : द ईस्ट – इण्डिया गजेटियर, जिल्द 1, पृष्ठ 233।
30. अलबेरूनी : अलबेरूनी का भारत, हिन्दी अनुवाद, पृष्ठ 287।
31. एच0एच0 विल्सन : विष्णु पुराण, अग्रेंजी अनुवाद, पृष्ठ 602–603।
32. कानूनगों : जाटों का इतिहास – पृ0 9–10।

33. वृहत संहिता : संस्कृत मूल पाठ, अध्याय 14, पृष्ठ 291 । ए0एच0 रोज : ए गलॉसरि ऑफ ट्राइव्ज एण्ड कास्टस ऑफ द पंजाब एण्ड नॉर्थ वेस्ट फन्टियर प्राविंसेज – में भी यही विवरण उदघृत हैं।
34. डॉ0 पी0 सी0 चान्दावत : महाराजा सूरजमल और उनका युग, पृ0 13।
35. गजेटियर ऑफ द डेरा गाजीखान डिस्ट्रिक्ट – पृष्ठ 58।
36. भागवत पुराण : नवम् स्कन्ध, अध्याय 8, पृष्ठ 58।
37. कानूनगों : जाटों का इतिहास – पृ0 11।
38. जेम्स टॉड : एनल्स एण्ड एन्टिविक्टीज ऑफ राजस्थान, भाग–1, पृष्ठ 129।
39. उपरोक्त पृष्ठ 74–76।
    एच0एम0 इलियट – एप्लीमेंट टू द गलॉसरि ऑफ इण्डियन टमर्स, पृष्ठ 489।
40. एलिफिन्सटन : हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, पृष्ठ 249–50।
41. एच0 एम0 इलियट : सप्लीमेन्ट दू द गलॉसरि ऑफ इण्डियन टर्म्स, पृष्ठ 489।
42. कनिंघम : आर्कियालॉजिकल सर्वे ऑफ इण्डिया – जिल्द 2, पृष्ठ 51–61।
43. जे0 आर0 ए0 एस0 : पृष्ठ 534।
44. उपरोक्त पृष्ठ 63।
45. यू0एन0 शर्मा : जाटों का नवीन इतिहास, पृष्ठ 1।
46. मेजर विंगले : हैण्ड बुक ऑफ जाटस, गुजरस एण्ड अहिरस, पृष्ठ।
47. कानूनगों : जाटों का इतिहास – पृ0 4।
48. विस्तृत विवरण के लिए देखें – उपरोक्त, परिशिष्ट अ पृष्ठ 191।
49. सी0पी0 वैद्य : हिस्ट्री ऑफ मैडिवल हिन्दू इण्डिया, पृष्ठ 87।
50. पं0 विद्यावाचस्पति : मुगल सम्राज्य का क्षय और उसके कारण, पृष्ठ।
51. डिस्ट्रिक्ट गजेटियर : मुजफ्फरनगर – 1920, पृष्ठ 79।
52. टॉड : एनल्स एण्ड एन्टिकिटीज ऑफ राजस्थान – प्रथम भाग, पृष्ठ 127।
53. कानूनगों : जाटों का इतिहास – परिशिष्ट अ, पृ0 189।
54. रोज : ए गलॉसरि ऑफ ट्राइव्ज एण्ड कास्टस ऑफ द पंजाब एण्ड नार्थ वेस्ट फन्टियर प्राविन्सेज – जिल्द 2, पृष्ठ 56, 472।
55. कानूनगों : जाटों का इतिहास – परिशिष्ट अ, पृ0 190।
56. मेजर जगदींश सिंह गहलोत : राजस्थान के राजवंशों का इतिहास, पृष्ठ 77।
57. महर्षि दयानन्द सरस्वती : सत्यार्थ प्रकाश – एकादस समुल्लास, पृष्ठ 227–228।
58. लगभग सभी प्रारम्भिक जाट शासकों के वंश वर्णन का उल्लेख करते हुये समकालीन कवि उन्हें यदुवंशी बताते हैं।
    कवि सूदन : सुजान चरित्र पृष्ठ 4 ।
    कवि सोमनाथ : सुजान विलास, पृष्ठ 133 ।
    मोतीलाल गुप्त : मत्स्य प्रदेश की हिन्दी साहित्य को देन, पृष्ठ 214 ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. प्रो0 इन्द्र विद्यावाचस्पति : मुगल साम्राज्य का क्षय और उसका कारण, 1949, हिन्दी ग्रन्थ, रत्नाकर कार्यालय, बम्बई।
2. हरर्बट रिसेल : पीपुल्स ऑफ इण्ड़िया।
3. डॉ जदुनाथ सरकार : मिलिट्री हिस्ट्री ऑफ इण्ड़िया।
4. उपेद्र नाथ शर्मा : जाटों का नवीन इतिहास, मंगल प्रकाशन, जयपुर, 1977।
5. ए0एच0 रोज : ए ग्लासिर ऑफ ट्राइब्ज एण्ड कास्ट्स ऑफ द पंजाब एण्ड नॉर्थ वेस्ट फ्रंटियर प्रोविंसेज लाहौर, 1911–19।
6. एफ0 एस0 ग्राउस : मथुरा–ए–डिस्ट्रिक्ट मेमोयर, 1874।
7. एफ0 एस0 ग्राउस : मथुरा मेमॉयर्स, ए डिस्ट्रिक्ट गजेटियर, 1873 ई0।
8. कालिका रंजन कानूनगो : हिस्ट्री ऑफ जाट्स, 1925 ई0।

9. वही : जाटों का इतिहास, मयूर पेपर बैक्स, दिल्ली 1996।
10. आर0 पी0 चन्दा : इण्डो आर्यन रेसेज।
11. गिरीश चन्द्र द्विवेदी : जनरल ऑफ इडियन हिस्ट्री।
12. देसराज शर्मा : जाट इतिहास।
13. वाल्टर हेमिल्टन : द ईस्ट इण्डिया गजेटियर।
14. अलबेरूनी : अलबेरूनी का भारत , हिन्दी अनुवाद।
15. गजेटीयर ऑफ द डेरागाजी खान डिसट्रिक्ट।
16. भागवत पुराण।
17. जेम्स टॉड : एलल्स एड एन्टविक्टीज ऑफ राजस्थान।
18. पी0सी0 चन्दावत : महाराजा सूरजमल और उनका युग, जयपाल एजेन्सीज आगरा, 1982।
19. एच0एच0 विल्सन : विष्णु पुराण, अंग्रेजी अनुवाद।
20. वृहत संहिता : संस्कृत मूल पाठ।
21. मेजर विंगले : हैण्ड बुक ऑफ जाटस, गुजरस एण्ड अहीरस।
22. महाकवि सूदन : सुजान चरित्र–काशी नागरी प्रचारणी सभा, 1980 सं0।
23. मोतीलाल गुप्ता : मत्स्य प्रदेश की हिन्दी साहित्य को देन, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर 2019 वि0 सं0।
24. कवि सोमनाथ : सुजान विलास ।
25. डॉ जदुनाथ सरकार : फाल ऑफ द मुगल एम्पायर, भाग–2, हिन्दी अनुवाद।
26. सि0पी0 वैध : हिस्ट्री ऑफ मेडीवल हिन्दू इण्डिया।
27. मेजर जगदीश सिंह गहलोत : राजस्थान के राजवशों का इतिहास।
28. महार्षि दयानन्द सरस्वती : सत्यार्थ प्रकाश।
29. डॉ धर्मचन्द विद्यालंकार : जाटों का नया इतिहास।
30. जोसेफ डेवी कनिंघम : सिक्खों का इतिहास।
31. प0 जवाहर लाल नेहरू : डिस्कवरी ऑफ इण्डिया।
32. शिवपुराण।
33. देव संहिता।
34. सी0वी0वैद्य महाभारत मीमांसा।
35. पी0डी0 मीतल : ब्रज का सांस्कृतिक इतिहास, राजकमल प्रकाशन, पटना, 1966।

डॉ. नीरज कुमार गौड़
प्राचार्य , एच के एल कालेज आफ ऐजूकेशन, सम्बध्द पंजाब विश्वविद्यालय, चंड़ीगढ़ , गुरूहरसहाय फिरोजपुर (पंजाब)